रामपन

RAMNESS

पार्ट–6

प्रस्तुतकर्ता :–

रामराज्य आह्वाहन मिशन

Website : www.ramrajyaahwahan.com
E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

प्रमुख कार्यालय :
ए 1, बी 2, पुष्पा अपार्टमेन्ट–III, 449, राजेन्द्र नगर,
सैक्टर 5, साहिबाबाद जिला गाजियाबाद (यू0पी0)
फोन नं0 0120–6516309, 09810655063

! ठहरो !

धरती पर, दोबारा से **रामराज्य** जैसी खुशियां लाने मे हमारा सहयोग करे।

रामराज्य आह्वाहन मिशन

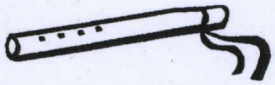

वैबसाईट देखें :

www.ramrajyaahwahan.com

नोट : आप भी राम हो सकते हैं, आप कहीं न कहीं के राजा हैं, आप किसी न किसी बात के धनी हैं, आप अपने परिवार या अपने व्यापार के राजा ही तो हैं, भगवान ने हर एक को बनाया हैं। अपना राज्य तथा अपना धन पहचानें और अपने राज्य को रामराज्य जैसा बनाकर, इस दुनिया में रामराज्य लाने में हमारा सहयोग करें।

मिशन को जानने के लिए सम्पर्क करें।

A1 & B2, पुष्पा अपार्टमैंट–III, 44A, राजेन्द्र नगर, सैक्टर 5, साहिबाबाद, जिला गाजियाबाद

फोन नं0 : 0120–6516399, 9313055063

E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

"मिशन सोचता है कि परिवार एक राज्य ही तो है, व्यापार एक राज्य ही तो है इसका मुखिया एक राजा ही तो है। हर राजा अपने राज्य को ऐसे क्यों नहीं चलाता जैसे राम जी अपना राज्य चलाया करते थे जब आप ऐसा चाहने लगेंगे, तो आप राम जी की तरह राज्य करना सीख भी जाऐंगे ही एवं जब आप राम जी की तरह राज्य करना सीख जाऐंगे तो रामराज्य ही करेंगे और क्या करेंगे। आपको भी आनन्द आ जाएगा आपके परिवार को भी आनन्द आ जाएगा और फिर धीरे धीरे रामराज्य ही होगा आप शुरु करें तथा अपने राज्य में रामराज्य बनाऐं।"

आजकल की बहुओं से मैं एक ही बात कह सकता हूँ कि आजकल की लड़कियां पढ़ी लिखी हैं, बाहरी दुनिया देखी हुई है, परिवपक्व हैं, दुनियादारी जानती हैं, उनकी अपनी सोच है, उनका अपना विवेक है वे कहती हैं कि हम समझदार हैं। शादी के सम्बन्ध में एक बात है कि सभी को एक नया घर मिलता है नयी सास मिलती है अब यह नया समझदार भी हो सकता है नासमझ भी हो सकता है तथा बेवकूफ भी हो सकता है यह तो लाटरी है कुछ भी हो सकता है। अब यहां पर जब मैं बहुओं से कहता हुं कि समझदारी दिखाओ, बड़प्पन दिखाओ, तुम तो समझदार हो तो ज्यादातर सभी का एक दम जवाब होता है अरे भाई हम तो समझदारी दिखाऐं मगर दूसरा तो समझे उसकी समझ में नहीं आता कुछ भी कर लो वो जब समझने को तैयार ही नहीं है तो क्या करुँ। यहां पर मैं बताना चाहूंगा कि हम क्या अपने तथा अपनों के घर को तभी अच्छा बनाऐंगे जब वे या दूसरे समझदार होंगे क्या हमारा खुद का समझदार होना कोई मायने नहीं रखता अर्थात क्या हम ऐसे ही समझदार हैं जो तभी समझदारी दिखा पाऐंगे जब दूसरे समझदार होंगे अर्थात अगर दूसरे समझदार नहीं होंगे, नासमझ होंगे या बेवकूफ होंगे तो हम खुशी खुशी अपने घर का भी तथा उन बेवकूफों के घर का भी सत्यानाश कर ही देंगे अरे भाई यह किस प्रकार की समझदारी है। मेरा मानना है कि हम तो समझदार तभी हैं जब चाहें हमें दूसरे समझदार मिलें चाहे नासमझ मिलें या मिलें बेवकूफ हम तो अपने घर को अपनों के घर को सिर्फ अच्छेपन की तरफ ही तरक्की की तरफ ही बढ़ाते हैं। बस फर्क सिर्फ इतना है

कि अगर हमें दूसरे भी समझदार मिल जाते हैं तो हम अपना काम अतिशीघ्र कर पाते हैं अन्यथा थोड़ा समय ज्यादा लगता है।

दूसरी तरफ एक और बात है कि हम अगर दूसरे को समझते हैं कि हम गलत नहीं हैं और दूसरा नहीं समझ पाता है या नहीं समझता है और हम वास्तव में गलत नहीं हैं तो इसका यह तो मतलब नहीं कि अब आगे के लिए हम गलत ही हो जाएं अर्थात हम तभी तक सही रहेंगे जब तक हमें लोग सही ही समझेंगे। ऐसा क्यों है हम जब सही हैं अच्छे हैं तो हमेशा अच्छा ही बना रहना चाहिए दूसरों की समझ में जब आएगा आ जाएगा बस कोशिश करते रहें कि दूसरे भी हमें अच्छा ही समझें। यह तो फल है अब फल तो तभी मिलेगा जब भगवान की इच्छा होगी फल के लिए जबरदस्ती न करें।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

मेरे से लोग कहते हैं रामराज्य आज घोर कलयुग में जहां सब रावण ही रावण हैं। मैंने कहा नहीं हकीकत कुछ और है हकीकत है कि दुनिया तो रामों से ही भरी पड़ी है हां हम रावण हो गये हैं अब देख लो इसका प्रमाण मैं बताता हूं आप किसी से कहकर तो देखो कि वो रावण है फिर देखो वह कैसे कैसे अपने अच्छे काम अपने अच्छे व्यवहार गिनाऐगा कि आप दंग रह जाओगे तथा शर्मिन्दा महसूस करोगे कि मैं इसे क्या समझ रहा था यह क्या निकला तथा यही हकीकत है और ज्यादा बोलोगे तो वह सीधा सा कहेगा तुम होगे रावण मैं तो राम हूं। वह ऐसे बताएगा कि आपको भी यकीन होने लगेगा शायद वह सही ही है वही राम है और मैं ही रावण हूं। इस प्रकार से निश्चित रुप से ही देखा जा

सकता है कि राम हमेशा हमें खुद को ही बनाने की जरुरत है दूसरों की परवाह न करें वे तो राम ही हैं। बस आप सब को सिर्फ रामपन सुनाते रहें कर करके दिखाते रहें ताकि लोग आपको राम कह सकें बस देखते रहें ध ीमे–धीमे आप का रास्ता, आप, आपका समाज स्वतः ही रामराज्य की तरफ बढ़ जाएगा।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

परिवार एवं एक संगठन

परिवार क्या है ठीक बिल्कुल एक संगठन की तरह है जहां पत्नी एक फेमिली मैनेजर ही तो है। परिवार का मुखिया पति अपनी फेमिली मैनेजर पत्नी को वो सब साध न उपलब्ध कराता है जो परिवार को पालने के लिए या परिवार को चलाने के लिए आवश्यक हैं तथा पत्नी उन सब साधनों के द्वारा परिवार को मैनेज करती है।

परिवार में बच्चे फेमिली मैनेजर के लिए सर्पोट हैं जिनकी मदद से पत्नी परिवार को मैनेज करती है या कभी कभी परिवार में ज्यादा काम देखते हुए नौकर चाकर भी रख लिए जाते हैं जैसे कि एक संगठन में होता है। दोनों अर्थात परिवार एवं संगठन की समानता निम्नांकित digram से एक दम समझ में आ जाती है।

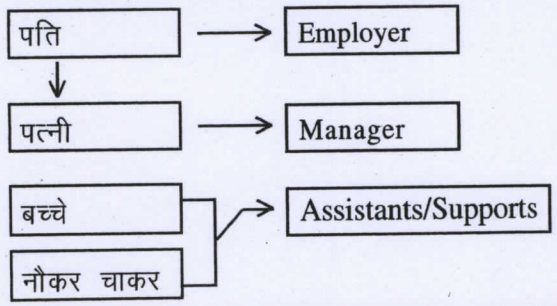

अब आप इन दोनों की समानता समझने के लिए और कुछ बाते देखें जो निम्नांकित है

1. संगठनों में मैनेजर ही सब कुछ होता है जितनी इसकी चलती है किसी और की नहीं चलती शायद मालिक की भी नहीं। जिन लोगों को एक अच्छा मैनेजर मिल जाता है संगठन तरक्की पा जाते हैं।

   ठीक इस ही तरह परिवार में पत्नी की भूमिका है पत्नी ही सर्वेसर्वा रहती है अगर पत्नी खुश तो सारा परिवार खुश, पत्नी परेशान तो परिवार में परेशानियां ही परेशानियां। अतः पत्नी परिवार की मैनेजर ही है जैसे मैनेजर से पंगा लेना खतरनाक साबित हो सकता है ऐसे ही पत्नी से पंगा लेना खतरनाक साबित हो सकता है।

2. अतः जो मालिक अपने मैनेजर को खुश रखता है अपने मैनेजर को मान दिलाता है वह मालिक सुखी रहता है ठीक इस ही प्रकार पत्नी को खुश रखना पत्नी के मान सम्मान का ध्यान रखना आवश्यक है।

3. जिस प्रकार मैनेजर चाहता है कि मेरे मालिक को मैं ही सबसे अच्छा लगूं मेरे से अच्छा काम करनेवाला और कोई मिले ही नहीं मेरी कोई कमी मालिक को पता ही नहीं लगे मैं जैसा मालिक को कहूं वह वैसा ही करे मैं कहूं स्टाफ की तारीफ करो तो वह उनकी तारीफ करे मैं कहूं इनको डांटो तो वह उन सबको डांटे। अर्थात चाहता है कि उसका मालिक उसकी मुट्ठी में हो बस सब कुछ ऐसा ही पत्नी का है क्योंकि वह परिवार की मैनेजर है।

4. जैसे संगठन में मैनेजर को यह चिन्ता रहती है कि कोई भी मालिक से उसकी शिकायत न करे तथा मालिक को कोई दूसरा मैनेजर न मिल जाए कहीं मालिक को दूसरा मैनेजर अच्छा लगने लगा तो इसका भविष्य खतरे में है। ठीक यही स्थिति पत्नी की है पति को कोई दूसरी स्त्री अच्छी न लगने लगे क्योंकि उसके भविष्य को खतरा हो जाता है। यही कारण है कि अगर पति अगर दूसरी स्त्री की प्रशंसा करता है तो वह ईर्ष्या से जल उठती है और कभी कभी तो उस दूसरी स्त्री से लड़ भी पड़ती है कि वह उसके पति पर डोरे क्यों डाल रही है सारी दुनिया पड़ी है तुझे मेरा पति ही मिला। मगर पति से कुछ नहीं कहती कि कहीं पति उससे नाराज न हो जाए।

5. भगवान ने स्त्रियों को जन्म से ही मैनेजर बनाया है वे मनों की मैनेजर हैं। परिवार का मैनेजर है ही क्या बस यही है कि परिवार के सदस्यों के मनों को मैनेज किया जाए, मनों का सही से ध्यान रखा जाए आदि।

कुछ मैनेजर डॉट कर मैनेज करते हैं कुछ मैनेजर प्रेम से मैनेज करते हैं कुछ मैनेजर समझदारी से मैनेज करते हैं यह मैनेजर की अपनी काबिलियत पर निर्भर करता है जो सबकी अलग अलग होती है। मैनेजर की काबिलियतों के आधार पर परिवार के सदस्यों का, परिवार के मुखिया का जीवन निर्भर करता है क्योंकि उनके मनों को वही मैनेज करती है, ध्यान रखती है, कभी डॉटकर, कभी खिला पिलाकर, कभी प्यार से आदि। अर्थात परिवार में पति पत्नी के

बीच जो होता है वह होना स्वाभाविक है चिन्ता का विषय नहीं है।

6. जहां पर मालिक अपने मैनेजर के लिए बार बार औरों से कहता है कि भई हमारे तो ये ही मालिक हैं हम तो नौकर आदमी हैं जैसा इनका हुक्म होता है हम तो वैसे ही करते हैं तो आर्गनाजेशन शान्ति से रह पाता है। ठीक इस ही तरह जो ऐसा भाव रखता है अपनी पत्नी के बारे में भई हमारी तो यही मालिक हैं हम इससे बाहर कैसे जा सकते हैं वही पति तथा परिवार खुश रह पाता है।
7. अतः अपने परिवार को रामराज्य जैसा बनाने के लिए अत्यन्त आवश्यक है कि आपके परिवार का मैनेजर सदा खुश रहे। बतौर मुखिया आप अपनी पत्नी को सभी आवश्यक साधन जो परिवार को संभालने हेतु आवश्यक हैं उपलब्ध कराऐं उसका मन जीतें कि वह अपना भविष्य आपके हाथों में असुरक्षित महसूस न करे ऐसा माहौल हो कि पत्नी का एक अच्छा फेमिली मैनेजर बनने का मन करे इसके लिए उसे उचित शिक्षाऐं, प्रशिक्षण, कोर्स, मनोंरंजन, उपहार, मशवरे आदि समय–समय पर होते रहने चाहिएं।
8. अनुशासन हेतु जैसे आर्गेनाइजशन में मालिक एवं मैनेजर के संबंधो का अच्छा होना आर्गेइजशन की सेहत के लिए अत्यन्त आवश्यक है ठीक इस ही तरह परिवार की सेहत अच्छी, स्वथ्य रहने के लिए पत्नी–पति के संबंधों का अच्छा होना भी अत्यन्त आवश्यक है।

   इसके लिए जैसे आर्गेनाइजेशन में जरुरी होता है कि मालिक एवं मैनेजर के बीच की कहा सुनी, स्टाफ के

सामने नहीं होनी चाहिए अर्थात पर्दे के भीतर होनी चाहिए ठीक इस ही प्रकार पति–पत्नी के बीच की कहा सुनी भी बच्चों के या बाहर वालों के सामने नहीं होनी चाहिए क्योंकि यह मैनेजर के लिए मैनेज करने मे परेशानियां उत्पन्न करता है जिससे नुकसान होता है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

हमें हमेशा एक सफल इन्सान बनना होता है जो सफल होता है सब उस ही से मिलना चाहते हैं सब उस ही का संग चाहते हैं सब उस ही के बारे में बाते करना चाहते हैं तथा अपना मन भी आत्मागौरव से, गर्व से भर पाता है। असफल इन्सान भी चाहते हैं कि सफल इन्सान भी उन्हें मान दें। मगर हम सफल कब होते हैं सिर्फ तभी तो हो पाऐगें जब हम सफल होना चाहेंगे, सफल होने के लिए कोई योजना बनाऐंगे, सफल होने के लिए जो रास्ता है उस पर चलेंगे तभी तो सफलता की मंजिल पर पहुचेंगे। असफलताऐं तो सिर्फ अनुंभव होती हैं जो आपको कहती है और ज्यादा मेहनत करो यह नहीं बताती हैं कि सफल होने की कामना ही छोड़ दो उसके प्रयास ही छोड़ दो।

इसके लिए आप सफल लोगों की जीवनी पढ़ें, उनको पढ़ो, उनको देखो उनसे प्रेरणा लो कि जब वे सफल हो सकते हैं तो आप क्यों नहीं हो सकते। फिर देखो आप कैसे सफलता की सीढ़ी पर चढ़ते चले जाते हैं। आप किसी वजह से असफल हो जाते हैं तो दुनिया आपको बुरा–भला कहेगी आप पर हंसेगी यह तो दुनिया की आदत है। आप अपने को आने वाले कल में सफल करो यही दुनिया आपके साथ हो जाऐगी आगे बढो दुनिया

आपके साथ हो जाऐगी आगे बढो दुनिया की वजह से चलना मत छोड़ो। आप भी एक दिन अवश्य ही सफल हो जाओगे यह तय है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

अक्सर ऐसा हो जाता है कि दो आदमी बांते कर रहे होते हैं या कहो लड़ रहे होते हैं तीसरा उनके बीच में अपने को समझदार समझकर आ जाता है और कभी इसको कभी उसको समझता है। वह तो समझाता है कुछ और मगर दूसरा और कुछ समझता है तथा स्थिति अच्छी होने की जगह और भी बुरी तथा कभी–कभी तो बहुत ही बुरी हो जाती है।

यहां पर मेरा कहना है कि तीसरा जो बीच में कूदता है उसका फर्ज है कि उसके बीच में कूदने से स्थिति सिर्फ अच्छी ही होनी चाहिए और अगर ऐसा नहीं है तो इससे अच्छा तो बीच में वो नहीं ही बोलता। बीच में बोलना या वाद विवाद में पडना तो संशय पूर्ण है ही क्योंकि रामायण में शंकर जी ने पार्वती जी से कहा है तर्क–वितर्क, वाद–विवाद तो एक पेड़ की शाखाओं के समान हैं जो पता नहीं कैसे और किसमें से कब निकल पड़ते हैं यह तो जितनी जल्दी समाप्त हो जाऐं उतना अच्छा। जल्दी से जल्दी रोकने चाहिए। यही समझदारी है।

अतः इस तीसरे का फर्ज है कि वाद विवाद पर नजर रक्खे तथा जैसे ही देखे कि ये गलत राह पर या बुरे नतीजे की तरफ जा रहें है तुरन्त मन मजबूत करके इन्हें रोक ले क्योंकि तुम्हारे बीच में बोलने से अगर अंजाम बुरा हुआ तो यह तो बुरी, बहुत ही बुरी बात हो जाएगी आप दूसरे के दोस्त नहीं दुश्मन कहलाऐंगे। क्योंकि

उसके साथ बुरा होने के लिए तुम ही जिम्मेदार होओगे क्योंकि इससे अच्छा तो तुम बीच में नहीं बोलते तो कम से कम उसके साथ इतना बुरा तो नहीं होता जितना बुरा तुम्हारे बीच में बोलने से हो गया है। आप अपनों के सच्चे हितैषी बनें हितैषीपना जबरदस्ती का दिखावे नहीं।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

हम धरती पर रामराज्य लाने का, रामराज्य स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं हमें आपकी मदद चाहिए आप हमें यथासंभव जो आपसे संभव हैं मदद करें ताकि हम अपने प्रयासों को कामयाब कर सकें भगवान भी उन्हीं की मदद करता है जो खुद भी अपनी मदद करता है।

रामराज्य आपको पुकार रहा है। रामराज्य धरती पर दोबारा आना चाहता है। आप में और हममें ही तो राम बसते हैं आगे बढ़ो अपने अन्दर के राम को जगाओ। हमारा परिवार हमारा व्यापार एवं हमारा कार्यक्षेत्र एक राज्य ही तो है अपने व्यापार अपने परिवार व अपने कार्यक्षेत्र के हम राजा हैं अपने राज्य को रामराज्य बनाकर दुनिया में रामराज्य लाने में सहयोग करो। जब आप कोशिश करेंगे तो रामराज्य बन ही जाएगा। कोशिश एवं प्रयास करने से सब हो जाता है रामराज्य लाना है लाना है लाना है। जय श्री राम।

24 घंटे में जीवन कैसे बदले

1. आपका सबसे बडा निर्णयः – यह ज्यादा समय में नहीं होता बस एक पल में होता है जब आप सच्चा श्रम करते हैं। एवरेस्ट पर चढ़ना भी एक ही बार में सफल नहीं हो जाता है। यह तब ही होता है जब हम कई बार असफलत होकर भी चढ़ना नहीं छोड़ते हैं।

1.1 परिवर्तन से घबराने की जरुरत नहीं है यह तो जीवन की निशानी है अगर यह नहीं होगा तो आप मर जाऐंगे।

1.2 ज्यादातर लोग सोचते हैं उनका बॉस या जीवनसाथी या मकान या इनके बच्चे आदर्श होते तो बेहतरीन होता मगर खुद को बदलने के बारे में नहीं सोचते कि काश वे एक आदर्श कर्मचारी या आदर्श जीवन साथी या आदर्श बासिन्दे या आदर्श मां बाप होते।

1.3 अगर कम्पनी ग्राहको की मांग के अनुसार खुद को न बदले तो उसका दिवालिया होना तय है।

1.4 हम निर्णय लेकर ही निर्णय लेना सीखते हैं। ज्यादा समय तक अनिर्णय चलना शंका एवं डर बना देता है।

1.5 आप उन गलतियों से नहीं सीख सकते जो आपने की ही नहीं।

1.6 अक्सर लोग कहते हैं कि मेरे साथ यह नहीं होता तो परिस्थितियां बिलकुल अलग होतीं जबकि हकीकत है अगर आपके साथ यह नहीं होता तो आपके जीवन में कुछ ऐसा जिसका आपको अंदाजा नहीं था कैसे अनुभव कर पाते। इसकी जरुरत है।

1.7 जोखिम का अंत हमेशा तबाही नहीं होता और असफलता सिर्फ घातक नहीं होती रास्ते बन्द होने से कोई फर्क नहीं पडता अगर नये रास्ते ढूंढने की हमारे पास चाह है।

1.8 परिवर्तन के संकल्प से उन क्षमताओं का इस्तेमाल शुरु होगा। जिनका अभी तक दोहन नहीं हुआ और ज्यादातर लोग जिनका दोहन करते भी नहीं है।

2. अपना मूल्य दोबारा तय करें।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

रामराज्य क्या है यह है एक ऐसा राज्य है जिसमें राजा इस राज्य को सिर्फ अपना राज्य नहीं मानता तथा मानता है कि यह प्रजा के हर सदस्य का अपना राज्य है तथा प्रजा का हर सदस्य यहां रहते हुए ऐसी ही सुख ऐसी ही आजादी महसूस करता है। यही कारण है कि यहां का हर सदस्य इसको खुशहाल बनाने में अपने मन से लगा रहता है क्योंकि इसका सुख तो सबके साथ इसको भी मिलता है।

हां कहते है कि प्रजा को या बच्चों को अगर खुली आजादी दे दी गयी तो वे लोग बिगड़ जाऐंगे तथा अनुशासनहीनता फैल जाएगी मगर एक बात और भी है कि इन्सान की एक प्रकृति है हर इन्सान एहसान करना चाहता है करवाना नहीं चाहता। बस इस रास्ते में राजा को इतना प्यारा सा होना होता है कि प्रजा परेशान हो जाती है इसके लिए कि हम अपने राजा को खुश कैसे करें उसके फायदे कैसे बढ़ायें उसके हितों का ध्यान कैसे रखें आदि। यहां प्रतिस्पर्धा इस बात की होती है कि कौन किसका भला कितना ज्यादा कर दे कहीं उसमें किसी को कोई कमी न लगे तथा स्वः अनुशासन शुरु हो जाता है तथा यह हो जाता है ऐसा निश्चित है। बस थोड़ा देर से आता है।

मगर जब आता है तो हमेशा के लिए आ जाता है तथा जीवन की तरक्की की यह सर्वोच्च स्थिति है। यह स्थिति ही रामजी ने अपने राज्य में ला दी थी यही वजह थी कि

रामराज्य में सर्वोच्च खुशियां, अनुशासन, सुख सभी को थे। राजा भी अपने इन सब सदस्यों को अपना राज्य खुशहाल बनाने में मदद करता है उन्हें जरुरत के साधन, शिक्षा, प्रशिक्षण, धन, सुखी रहने के तरीके, मार्गदर्शन, स्वस्थ मनोरजन, आदि उपलब्ध कराता है। इस प्रकार राजा एवं प्रजा दोनों मिलकर इस रामराज्य का अर्थात स्वर्ग का आनन्द उठाते हुए इस जीवन को सम्पूर्ण करके दूसरे लोक को जाते हैं।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

जीवन में सबसे कीमती क्या है अमूल्य क्या है यह है प्रेम। यह एक ऐसी चीज है जो जब दिमाग में होता है तो दिमाग में ऐसे रसायन उत्पन्न करता है जिनसे आपका मन खुशियों से उत्साह से आत्मविश्वास से आत्म सन्तुष्टि से तथा आत्मबल आदि से भर जाता है तथा अपने जीवन को सफल महसूस करता है। प्रेम कैसे पैदा होता है यह पैदा होता है 'प्रशंसा' से। आप हमेशा चारों तरफ अपनी प्रशंसा, दूसरों के मन में अपनी चाह चाहते हो बस इसी से आपका मन प्रेममय होता है। जब लोग आपकी तारीफ करते हैं आपकी कामना करते हैं आपको चाहने लगते हैं तो आप खुश हो जाते हैं यह सब कब होता है जब आप प्रशंसनीय अपने को बना लेते हैं।

अब यह है कि प्रशंसनीय क्या होता है यह जब तुम वह करते हो और अत्यन्त सुन्दर तरीके से करते हो जो करना तुम्हारा तत्कालीन कर्तव्य है फर्ज है। अगर आप विद्यार्थी हो तो सुन्दर तरीके से पढ़ना, दूसरों को खुश करने का सुन्दर सुन्दर प्रयास करना, खुद दुख उठा लेना मगर दूसरों की खुशी का सुन्दर सा ध्यान रखना,

सुन्दर सा बड़प्पन होना व दिखाना। जब आप यह सब करते हैं तो जो लोग आपकी तरफ जो जब देखते हैं, प्रशंसा करते हैं तथा आपका मन आत्मगौरव, आत्मविश्वास, आत्म प्रसन्नता, आत्मसंन्तुष्टि से भर जाता है जो आपके जीवन के लिए अमृत के समान है सच में यही तो अमृत है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

प्रियजनों, आओ अपने राज्य तथा राज्यों को रामराज्य जैसा सुन्दर खुश एव शान्त बनाने के प्रयास में लगें। जब कोशिश करेंगे तो धीमे धीमे बनने ही लगेगा। आगे बढ़ें भगवान आपको अपना प्रेम देने के लिए आपको पुकार रहे हैं।

इन्सान (जिन्दगी) = शरीर + मन

शरीर = भौतिक शरीर (Physical Body)

मन = आध्यात्मिक शरीर (Spiritual Body)

दोनों शरीर ही काम करते है।

सद् चित्त + आनन्द = सच्चिदानंद

अर्थात परमब्रह्म अतः हम कह सकते हैं जब हमारा चित्त (अर्थात् मन) सच्चा हो जाता है तो आनन्द आने लगता है सच में देखें सच में जीवन का यही आनन्द है। ऐसा आनन्द जो हमेशा रहता है, कभी कम नहीं होता बढ़ता ही बढ़ता जाता है तथा किसी पर निर्भर नहीं है कुछ और हो न हो मगर यह तो रहता ही रहता है। क्योंकि जैसे चित्त तो कुछ हो न हो मन मन में हर चीज के मजे ले ही लेता है, इस ही तरह का है यह आनन्द चित्त का आनन्द। जब यह शुद्ध हो जाता है सच्चा हो जाता है तो

यह चित्त का आनन्द एक असीमित भण्डार हो जाता है जो कभी खत्म नहीं होता बढ़ता ही बढ़ता जाता है तथा α (Infinity) हो जाता है अर्थात स्वयं 'सच्चिदानंद' 'परम ब्रह्म'।

अर्थात्

निर्गुण ब्रह्म सद् चित एक अच्छी पवित्र सच्ची आत्मा जहां शरीर नहीं है

सगुण ब्रह्म सद् चित्त शरीर एक ऐसा शरीर जिसका चित्त अच्छा पवित्र एवं सच्चा है तथा शरीर भी उसी के अनुसार कार्य करता है।

कार्य :

शारीरिक कार्य : वे कार्य जो शरीर के दारा किये जाते हैं।

मानसिक कार्य : वे कार्य जो मन के द्वारा किये जाते हैं।

जीवन = शरीर + मन। दोनों ही अलग–अलग निरन्तर कार्य करते हैं तथा अपने द्वारा किये गये कार्यों का फल या भुगतान पाते रहते हैं निरन्तर।

हर इन्सान में सिर्फ ऊपर लिखे तत्वों का तथा गुणों का सम्मिश्रण होता है कहीं पर शरीर ज्यादा शाक्तिशाली होता है तथा कहीं पर मन ज्यादा शाक्तिशाली है इस ही प्रकार किसी का शरीर अच्छे काम करता है तथा मन अच्छा नहीं सोचता है बल्कि बुरा बुरा मन में करता है। कहीं पर मन तो अच्छा सोचता है मगर शरीर अच्छे काम नहीं करता है तथा दूसरी तरफ कहीं कहीं दोनो ही अच्छे काम करते हैं तो कहीं कहीं दोनों ही बुरे काम करते हैं।

पुरुष : शरीर मन से ज्यादा शक्तिशाली होता है।

स्त्री : शरीर कमजोर होता है तथा मन ज्यादा प्रभावशाली होता है कुदरत ने बनाया है यही वजह है कि स्त्रियों मनों की अच्छी मैनेजर हैं तथा पुरुष इन्सानों के अच्छे मैनेजर हैं।

हमें क्या पढ़ना चाहिए, जीवन में क्या सीखना चाहिए, क्या सीखना आवश्यक है ही जीवन को सफल व सुखी बनाने के लिए। निचोड़ रुप में बस एक ही चीज है एक ही शब्द है सत्य। आप जहां भी हैं जीवन के जिस रुप में भी हैं बस सत्य ही सीखना है, सत्य ही समझना है, सच्चा सच का ही अनुकरण करना है, बस जीवन सफल एवं सुखी धीमे धीमे स्वतः ही हो जाएगा। सद् चित्त आनन्द जिसका चित्त सच्चा, अच्छा, निर्मल एवं पवित्र है वही सच्चिदानंद है। अब सभी लोग सच या सत्य को ही धर्मों के आधार पर अपने पास उपलब्ध जानकारियों के अनुसार समझते हैं। सनातन धर्मी यही जानते हैं राम नाम सत् है अर्थात राम को मानते है, शिव को मानते है तथा शिव राम को मानते हैं अर्थात उन्हीं में उनके ही व्यवहारों में उनके ही चरित्रों में उनकी ही दी गयी शिक्षाओं में डूब जाना चाहते हैं तथा उसको मानते हैं कि उन्होंने सत्य में डूबकी लगा ली है। सच भी तो है।

इस ही प्रकार मुस्लिम वे अल्लाह को जानते हैं अल्लाह को ही शुरु से पढ़ा है कुरान से ही सच को सीखा है तो सीधा सा है जो अल्लाह ने दिखाया जो अल्लाह ने बताया वही तो सच्चाई का रास्ता है वही तो सच्चा मजहब है वही तो सच्चा आनंद है अतः अल्लाह यह भी तो सत्य ही है।

इसी प्रकार ईसाई वे यीशु को जानते हैं बाईबिल से ही तो सच को सीखा है जो बाईबिल ने सिखाया जो प्रभु यीशु ने मार्ग दिखाया वही तो सच की राह है अतः यीशु ही तो सत्य हैं। इस ही प्रकार सिक्ख धर्म वे गुरुवाणी को ही जानते हैं जो गुरु ग्रन्थ साहिब ने सिखाया दिखाया वही तो सच की राह है बचपन से यही देखा है हमारी यही जानकारी है।

इस ही प्रकार जैन धर्म बचपन से ही श्री महावीर जी को देखा उन्हीं से सीखा है उन्हीं की जानकारी है जो उनके मां बाप ने, जो जैन समाज ने सिखाया सत्य क्या है सत्य की राह क्या है उसे ही तो वे लोग मानेंगे।

अर्थात कोई गलत नहीं है सभी सत्य की राह पर हैं सच में जीना चाहते हैं जैसे वे जानते हैं। डरते हैं कोई उन्हें सच की राह से भटका न दे वे चाहते हैं वे जीवन में एक सच्चे इन्सान कहलाएं अब अल्लाह के बन्दों को कोई राम की बात बताता है तो वे घबरा जाते हैं कि वह भटका न दे राम के भक्तों को कोई अल्लाह की बात बताता है तो वे घबरा जाते हैं कि वो उन्हें भटका न दे। इस ही प्रकार सब के बीच है कल्पित भय सच के रास्ते से भटक जाने का खतरा। यही है जो इन्सानों को इन्सानों से लड़ा देता है। अब ये जो कट्टर लोग हैं ये किसी और बात में चूंकि न तो उलझना चाहते हैं न अपने चाहने वालों को उलझने देना चाहते हैं तथा कट्टरता से विरोध करते हैं और झगड़ा हो जाता है। काश ये सब कट्टर न होते काश ये किसी के मत का खण्डन करने की बेवकूफी न किया करते काश इन्हें अपने भगवान पर अल्लाह पर यीशु पर पूरा भरोसा होता तो ये नहीं लड़ते।

समझ जाते कि अल्लाह या भगवान अपने बन्दों का खुद ही भला करेगा वह खुद ही ध्यान रखने में समर्थ है हम क्यों वो करने लगे जो अल्लाह को, भगवान को, यीशु को, या गुरु साहिब को नापसन्द है। उन्होंने तो खुद सब कुछ सहा है कभी विरोध करने वालों से झगड़ा नहीं किया है सिर्फ समझाया है समझ जाऐं तो ठीक न समझ पाऐं तो ठीक मगर उन्हें गन्दा काम करना पसन्द नहीं। झगड़ना, कमजोर को ताकत से दबाना, वे समझते तो हैं मगर ताकत का प्रयोग नहीं करते क्योंकि भगवान, अल्लाह, यीशु, गुरु साहब सभी कमजोर की ताकत बनने में विश्वास रखते है न कि कमजोर का दमन करने में। आप किसी से तभी तो लड़ने लगते हो क्योंकि तुम समझते हो कि तुम सामने वाले से ताकतवर हो एवं सामने वाला अपने को तुम से ताकतवर समझ रहा है। तो तुम उसे सुधारना चाहते हो कि सही समझ ले ताकतवर तु नहीं है हम हैं तभी तो झगड़ लेते हो वरना कहां लड़ते। यह अल्लाह की या राम की राह नहीं है वे ताकत का प्रदर्शन करने में भरोसा नहीं करते वे तो सिर्फ दूसरों को सच का रास्ता समझाते हैं सच की राह बताते हैं उसके बाद जबरदस्ती नहीं करते क्योंकि जबरदस्ती करना भी तो पाप है। समझदारी से इन्तजार तो करो दूसरे को सोचने का, समझने का, उसे आत्म अवलोकन करने का मौका तो दो खुद ही वह सच की राह पर आ जाएगा। जरुरी तो नहीं है वह आपके रास्ते से ही सच पर आए आने दो उसे सच की राह पर स्वयं बस यही सुन्दर है यही सच्चा है यही अच्छा है।

अब आप देखते हो सब सच के ही तो इर्द गिर्द हैं सभी धर्म के भगवान सच के लिए ही तो हैं सच ही तो बताते हैं सच्चिदानंद, परमात्मा, प्रकाश, निराकार, ऊँ, वाहे गुरु तक ले जाते हैं कहां है विरोध कहां है मतभेद कहीं नहीं हमारा भ्रम है।

आऐं मेरे दोस्तों सभी को जानें मिलाऐं उसको समझें जो मन को, तुम्हारी आत्मा को सच लगे अपनाते चले जाऐं धीरे धीरे आप सच के करीब और करीब और करीब पहुंचते ही चले जाऐंगे। सब्र पूर्वक बस सच की तरफ बढ़ते ही जाएं आप स्वयं ही पहुंच जाऐंगे सच के करीब, सच तक। सच तो यही है आप में मन है मन को परमात्मा नियंत्रित करता है जब मन शरीर से निकलता है तो परमात्मा में जाकर विलीन हो जाता है यही मन है जिसके अस्तित्व को सब जानने है जो न दिखायी देता है न छुआ जा सकता है न जलाया जा सकता है न चलता है मगर सब कुछ करता है सब कुछ महसूस करता है तथा जिसका मन सच्चा पवित्र हो जाता है वहीं मन पर परमात्मा की कृपा कहलाती है वहीं मन और परमात्मा का एकाकार हो जाता है यही सम्पूर्ण सत्य है।

अतः निष्कर्ष है कि आप रामायण पढ़ें या पढ़ें कुरान आप बाईबिल पढ़ें या पढ़ें गुरु ग्रन्थ साहब ये सब है बस सत्य की पुस्तकें जो सच की राह पर ले जाती हैं अब जिसको जो मिल जाऐ। किसी को अच्छा किसी को बुरा कहने का तो कोई मतलब ही नहीं है सभी सच्चे हैं। अतः सच की राह पर चलना शुरु करें रास्ता कोई भी हो आनन्द खुद ही आना शुरु हो जाएगा क्योंकि जहां जिसका मन सच्चा अच्छा एवं पवित्र है तो वहीं सच्चा आनन्द है वही

तो सच्चा सुख है वही तो जीवन की सच्ची सफलता है। सत्य बस यही संपूर्ण है सत्य सच्चा सत्य और ज्यादा सच्चा सत्य बस बढ़ते चलें तथा बारीकी से जानते चलें आनन्द खुद ही आ जाएगा।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

एक बार मेरे से एक भक्त ने कहा कि राम जी की पूजा तो पहले से ही होती है रामभक्त तो पहले से ही हैं कितने धर्म गुरु राम जी की ही शरणागत होने की बात करते हैं पर अब तक कुछ न हुआ घोर कलयुग बढ़ता ही जा रहा है तो आपको कैसे लगता है आज कुछ नया होने जा रहा है अब रामराज्य आने वाला है ऐसा कैसे अगर आप इस पर प्रकाश डालें तो हम रामराज्य के रास्ते को उसके फल को और भी आसानी से समझ सकें। सवाल बिलकुल स्पष्ट एवं बिल्कुल उचित था तथा लोगों को एक उचित राह दिखाने वाला था। मैंने भक्त से कहा कि मैं इसे अवश्य समझाने तथा बताने का प्रयत्न करूंगा। यह एक रहस्य की बात है जो राम जी की कृपा का फल है यह रहस्य है पूजा पद्धतियों के बीच का फर्क। आज भी राम जी का भक्त राम जी के शरणागत होने, श्री राम जी की पूजा करने, श्री राम जी के अनुयायी बनने को कहा जाता है ताकि श्री राम जी की कृपा प्राप्त हो सके क्योंकि रामकृपा को बहुत बड़ा फल बताया गया है। यह रामकृपा भिन्न भिन्न रूपों में होती है तथा जब आप श्री राम जी की पूजा करते हैं तो राम कृपा हो भी जाती है।

रामराज्य आह्वाहन मिशन जो राम जी की पूजा कहता है वह कहता है कि आप श्री राम जैसे बनें क्योंकि अगर

आप राम जैसा या राम बनेंगे तो आप न केवल अपना बल्कि दूसरों का भी, समाज का भी, इस दुनिया का भी भला कर पाऐंगे एवं श्री राम की यह सच्ची पूजा होगी क्योंकि श्री राम कभी इस बात से इतने खुश नहीं होते कि लोग उनकी पूजा करें जितने इस बात से खुश होते हैं कि वे राम बनें तथा अपना व अपनों का व अपनी प्रजा तथा दूसरों का भला करें तथा आप अपना या अपनों का भला या दूसरों का भला तब ही कर पाऐंगे जब आप राम जैसे होंगे अर्थात आप में रामपन होगा। साथ में यह भी है जितना ज्यादा रामपन होगा उतना ही ज्यादा भला आप कर पाऐंगे उतने ज्यादा ही आप सुखी होंगे एवं जब आप सुखी एवं खुश होंगे तो श्री राम भी आपको देख देखकर खुश होंगे। क्योंकि श्री राम के भक्त श्री राम के शरणागत खुश हों श्री राम तो इस ही से खुश होते हैं उन्हें अपनी शान की, मान की बिल्कुल भी परवाह नहीं होती है वह तो अपने मान की परवाह किये बिना दूसरों को मान देने में तथा मान दिलाने में विश्वास रखते है।

तो यही कारण है मुझे इस ही लिए भरोसा है क्योंकि अब श्री राम जी ने ऐसी कृपा कर दी है कि अपनी पूजा का ऐसा तरीका बता दिया है जो अत्यन्त सरल है तथा आत्मनिर्भर बनाता है श्री राम जी का सच्चा भक्त, सच्चा शरणागत एवं एक सफल संसारी बनाता है तथा निश्चित रूप से रामकृपा पाने एवं निरन्तर कृपापोत रहने का अधिकारी बनाता है अतः साफ लगता है कि रामराज्य आने वाला है क्योंकि सभी 'राम' बनने वाले हैं इसमें एवं पहले की पूजा में बस यही फर्क है कि पहले अगर 1000 लोग श्री राम की पूजा करते थे तो कुछ न कुछ पर अवश्य राम कृपा होती थी अब इस पूजा में यह फल है कि अगर

1000 लोग पूजा करेंगे तो शायद ही कोई होगा जिस पर राम कृपा न हो। आऐं आगे बढ़ें, रामकृपा आऐगी ही आऐगी रामराज्य का आना निश्चित है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

रिश्तों की मर्यादा :–

1. मर्यादा हमेशा रक्खें अगर यह नहीं होगी तो चाहे तुम सही भी हो डांट की सजा की हकदार अनावश्यक ही हो जाओगी बहु को सास का सामना नहीं करना होता है चाहे सास गलत भी हो अगर वह गलत है सामने से हट जाओ बात मत मानो मगर सामना मत करो वरना गलत ठहरा दिये जाओगे।
2. पति परमेश्वर होता है ऐसा कहा जाता है अब ऐसा कहा जाता है तो शायद बहुत लोगों ने ऐसा महसूस किया होगा अब कहावत है तो शायद यही सही है। अतः ऐसा मान कर देखें हो सकता है पत्नी के जीवन में यही मानने से सुख रहता हो आजमा के देखो। अगर पति परमेश्वर जैसा बनने की कोशिश कर रहा है तब अवश्य रुप से परमेश्वर जैसा दयालु परमेश्वर जैसा कृपालु नहीं तो उसमें ऐसा होने की मन में कामना जगाऐं उस पर ऐसे ही आस्था एवं विश्वास करें जैसी हम परमात्मा में करते है क्योंकि इस जीवन में तो वही आपका भगवान है वो खुश तो दुनिया खुश। अगर वो परमेश्वर हो जाएगा तो वह आपको इतना खुश करेगा कि आप खुद भी अपने को इतना खुश न कर सकोगे उसमें परमेश्वर जैसी आस्था तथा कामना बनाने की कोशिश करें।
3. पति की या मेरी भी तो इच्छा करती है कि मेरी पत्नी मेरे पर इतना विश्वास रखती है कि एकदम से मेरे

लिए जीने मरने के लिए तैयार हो। अब यह तो मेरा काम है मैं उसे कुछ भी तकलीफ न होने दूं मेरे इस काम को अगर वह अपने हाथ में लेगी तो मुश्किल हो जाएगी मैं एक अच्छा पति होते हुए भी अच्छा पति कैसे कहला पाऊंगा। मेरी भी इच्छा रहती है कि मेरी पत्नी का मुझमें पूर्ण विश्वास हो इस कदर ऐसा भाव कि मेरे पति के लिए ही तो मै हूं अगर वह मुझसे मेरी जान भी मांगे तो मैं खुशी खुशी दे दूंगी तथा खुशी महसूस करुंगी ऐसे समर्पण का सुख तो लेकर देखे। अर्थात् पति की सलाह इच्छा का मान रखना।

4. परमेश्वर अर्थात् राम कभी भी अपने मान की परवाह नहीं करते हैं वह तो अपनी प्रजा तथा अपने आश्रितों एवं शरणागतों के मान के लिए मरे जाते हैं वह उनको उसे (पति को) परमेश्वर या राम मान के तो देखे फिर देखे वह पत्नी का मान कैसे बढ़ता है।
5. सभी जानते है ताली दो हाथ से बजती है तो हम तो अपना हाथ निश्चित रुप से हटा ही सकते हैं हम अपना हाथ हटायें यह अपेक्षा न करें कि दूसरा अपना हाथ हटाऐ वह हटा ले तो उसका बड़प्पन मगर हम हमेशा उम्मीद करें कि हाथ तो हमें ही हटाना है।
6. तुम कहती हो कि झगड़ा कौन निपटाता है अतः जब अन्त में तुम्हें ही करना है तो मैं चाहता हूं शुरु से ही निपटा लो वह और भी ज्यादा बेहतर है। इसमें और भी ज्यादा प्रशंसा होगी।
7. झगड़े के बाद पता चलता है कि किसके मन में कितने जहर भरे हैं उन जहरों को बर्दाश्त करना भारी हो रहा है काश ये जहर न उगले गये होते कितना अच्छा रहता जब जहर बाहर आते हैं तो

अच्छा खासा आदमी कितना छोटा हो जाता है अतः हम खुद को भी छोटे होने से बचायें तथा दूसरे को भी। क्योंकि अगर हम दूसरे से बहस करके उसका जहर उगलवा रहे हैं तो उसको छोटा करने का पाप कर रहे हैं। इस पाप से बचें उसका छोटापन पता नहीं कभी दूर हो पाऐगा भी या नहीं। मनों में गांठ तो बन ही जाऐंगी पता नहीं कभी खुल भी पाऐंगी या नहीं खुद को भी बचाओ दूसरे को भी।

8. पति की मजबूरी समझो क्यों वह सिर्फ तुम्हें चुप करता है या कुछ नहीं कहता। कारण है कि अगर पत्नी मां का सामना करेगी तो निन्दनीय कहलाऐगी ही तथा पति के सामने पत्नी को कोई बदतमीज कहेगा तो पति कैसे सहेगा क्योंकि यह पति का फर्ज है कि वह अपने परिवार को अच्छा परिवार बनाऐ। उसकी पत्नी की लोग तारीफ करें उसको सब मान दें इसी से पति का मान बढ़ेगा तथा पत्नी का जीवन सार्थक होगा तथा पत्नी धर्म उचित प्रकार से निभ पायेगा। अपने मान सम्मान की परवाह मुझ पर छोड़ दो खुद इसके लिए परेशान न होओ मुझ पर भरोसा करो पत्नी पति के सम्बन्ध का यह तकाजा है।
9. पत्नी पति की अर्द्धांगिनी है अर्थात अगर पति का पत्नी का व्यवहार अलग अलग होगा तो परेशानी होगी। पत्नी पति के व्यवहार के अनुकुल रहेगी तो ही सुख रहेगा। पति से विरोध रहेगा तो कैसे जीया जा पाऐगा हां अगर पति का कुछ व्यवहार गलत है गन्दा है तो धीमे–धीमे अच्छा बनाने की कामना भावना तथा प्रयास धीमे–धीमे करते रहना चाहिए मगर विरोध नहीं।

10. अगर सास हमें कुछ ऐसी बातें कहती है जो हमें अच्छी नहीं लगती हैं हम व्यवहारिक बने सामने विरोध करना बुरी बात है जब हम अच्छे हैं तो हम तो बुरी बात न करें।

11. मां का स्वभाव रोकना टोकना उसके अपने अनुभवों के आधार पर होता है। जो भी अनुभव हैं यह ठीक ऐसे ही हैं जैसे हम अपने बच्चों को रोकते टोकते हैं अगर बच्चे हमारा सामना करने लगें तो कितना बुरा लगेगा। जैसे बच्चे हमारा सामना नहीं करते मगर कभी मान जाते हैं कभी मनमानी करते हैं बस ऐसे हमें करना हैं हम उनके बच्चे हैं बड़े हो गये हैं आज हमारे शरीर हमारे दिमाग उनसे ज्यादा बड़े या ताकतवर हो गये हैं तो इसका यह मतलब नहीं कि हम उनका सामना करने लगें उनका विरोध करने लगें हम हैं तो उनके बच्चे ही।

12. पत्नी एक फैमिली मैनेजर है बच्चे, मां, बाप, पति, परिवार का मुखिया एक फैमिली है अब परिवार में अनुशासनहीनता होगी तो कहा तो मैनेजर को ही जाएगा बुरा क्यों माना जाता है यथा सम्भव अच्छा प्रबन्ध करें अच्छा मेनेजमेन्ट नहीं आता तो सीखें जब सदप्रयास होगा तो धीरे धीरे यह सब भी अच्छा हो ही जाएगा। अब अगर मैनेजर ही लड़ने लग जाएगा तो परिवार का क्या होगा समझा जा सकता है। मैनेजर मुखिया का सहारा बने, मुखिया मैनेजर का सहारा बने तथा इस प्रकार सारे परिवार को सुख दे तो इससे मैनेजर की भी तारीफ होगी तथा मुखिया भी एक अच्छे परिवार का मुखिया होने का गौरव प्राप्त कर सकेगा।

13. पारिवारिक अनुशासन को समझो, तीर के चिन्ह की दिशा अनुशासन के अनुसार बहता है आदेशात्मक भाषा सिर्फ तीरों की दिशा अनुसार हो सकती है बाकी सब में सिर्फ एक दूसरे का ध्यान रखना होता सिर्फ फर्ज होता है तथा विरोध नहीं करना होता है व्यवहारिकता दिखानी होती है।

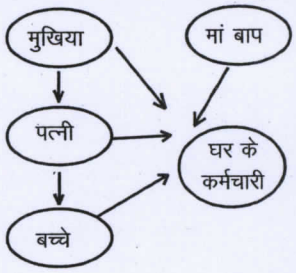

14. अपने पति को परमेश्वर (राम) जैसा मानें ऐसा बनने में उसे सहयोग करें अगर किसी तरह ऐसा हो गया तो आनन्द आ जाएगा। कभी न सोचें न कहें कि छोड़ो तुम्हारे बस का नहीं है राम बनना भगवान बनना अब अगर वह सच में राम होगा तो सिर्फ तुम्हारा ही तो ध्यान नहीं रखेगा सभी का ही तो रखेगा। मदद करें इस ही में सच्चा भला एवं सच्चा सुख है।

15. चलो तुम अपने पति से अपनी आशाऐं बताओ कि भई तुम अपने पति को अपना परमेश्वर (अन्नदाता, रक्षक, संरक्षक, अभिभावक, पूजनीय, सम्मानीय, दया का सागर, कृपा का सागर, गुणों का सागर, ज्ञान का भंडार) मानती हो उसे क्या करना चाहिए एवं इसके लिए तुम उससे क्या आशाऐं रखती हो ये सोचकर लिस्ट बनाओ तथा बताओ ताकि तुम्हारा पति यथा सम्भव तुम्हारी उम्मीदों पर तुम्हारी आशाओं पर खरा उतरने का यथोचित प्रयास कर सके।

16. 'एक चुप सौ को हरावे' यह एक कहावत है कहावत वैसे ही नहीं बनतीं तमाम अनुभवों के बाद तथा तमाम बार कोई बात सिद्ध होने के बाद ही कोई बात कहावत बनती है। अतः हम स्वयं को जिताने वाला वह रास्ता जो कि एक आदर्श रास्ता है उसे क्यों न अपनावें। अब पत्नी एक मैनेजर है अगर वह जीतेगी तभी तो अच्छा मैनेजमैन्ट होगा मगर उसकी प्रशंसा होना भी अत्यन्त आवश्यक है अगर प्रशंसनीय तरीके से जीतेगी तो मैनेजमेन्ट सफल है तथा किसी और तरीके से जीतेगी तो बुराई की पात्र हो सकती है निन्दा की पात्र हो सकती है तथा मैनेजमैन्ट फेल हो सकता है।

17. फैमिली एक तरह से प्राईवेट संगठन ही है तथा प्राईवेट संगठन में जो लोग "Boss is always right" के सिद्धान्त पर चलते हैं वही खुश रहते हैं बॉस से लड़ने लगोगे तो बॉस का भी एवं तुम्हारा भी दोनों का ही जीवन नरक हो जाएगा नौकरी हर समय खतरे से में पड़ी रहती है अर्थात ध्यान रखें परिवार का मुखिया बॉस ही तो है।

18. यह मन में, या सबके साथ मिलकर, देखकर यह तय करना आवश्यक है कि मुखिया कौन है क्योंकि मुखिया तो एक ही हो तो अच्छा है तभी अनुशासन रह पाता है फिर हमें वैसी कामनाऐं वैसे सहयोग वैसी ही भावनाऐं रखनी चाहिए तभी परिवार खुशहाल रहेगा ज्यादातर तो परिवार का मुखिया पति ही होता है कहीं कहीं ससुर परिवार का मुखिया होता है तथा कहीं कहीं ददिया ससुर परिवार का मुखिया होता है कहीं कहीं पत्नी भी, सास भी, मुखिया होती है अगर

वह Dominent, सबसे ज्यादा प्रभावशाली, ताकतवर (यह किसी भी प्रकार की हो सकती है सियासत, कमाई, समझदारी, हाजिर जवाबी या कुछ और के बल पर) है तो। मगर मुखिया एक ही होना चाहिए एक म्यान में दो तलवारें दुखदायी होती हैं, हो सकती है। अतः कोशिश करें मुखिया एक ही हो उसको सब अपने अपने सहयोग द्वारा अच्छा राम जैसा बनाऐं तथा उसके कार्यों में उसकी मदद करें ताकि वह परिवार का एक अच्छा मुखिया साबित हो सके।

19. शादी क्या है बस ऐसे जैसे कि दुनिया में से ढूंढकर एक फैमिली मैनेजर ले आना। अब आवश्यक है यह समझना कि परिवार पहले से ही है एक मैनेजर ले आया गया है कि परिवार सुचारु रुप से चलाया जा सके तथा इसके बदले मैनेजर को उसके जीवन के लिए आवश्यक सभी सुख एवं साधन उपलब्ध कराए जाऐं। मैनेजर को चाहिए कि वह अच्छा प्रबन्ध दिखाए सारे परिवार को सुख, खुशी पहुचांए न कि परिवार में कमियां निकालना, परिवार को बुरा भला कहना, परिवार के सदस्यों से लड़ना मरना शुरु कर दे। अगर ऐसा होगा तो स्वाभाविक है परिवार की मैनेजर के साथ सहानुभूति नहीं रहेगी मैनेजर को निकाला भी जा सकता है मैनेजर को बदलने का प्रयास भी किया जा सकता है इसको मैनेजर का अपना दोष ही माना जाएगा। मैनेजर को अच्छी तरह से सौहार्दपूर्ण वातावरण रखते हुए अपने कर्तव्यों, अपने व औरों के सुखों को मैनेज करना चाहिए परिवार का दायित्व मैनेजर का नहीं है यह परिवार के मुखिया का है मैनेजर ने तो परिवार के मुखिया

को उसके दायित्वों को निभाने में सिर्फ मदद करनी है। इस सम्बन्ध को सही प्रकार ही समझें तथा अपने भी एवं परिवार के और सदस्यों का भी जीवन सुखी एवं खुश करें।

20. आज्ञाकारिता :– एक महत्वपूर्ण तत्व है किसी भी संगठन एवं परिवार के लिए नितान्त आवश्यक है जहां लोग आज्ञाकारी हैं वहीं सुख एवं शान्ति होगी यह एक ऐसा आभूषण है जो आपको एवं आपके जीवन को रोशन, जगमगा देता है इसके लिए आवश्यक है कि आज्ञा देने वाला सिर्फ ऐसी ही आज्ञाऐं दे जो परहितकारी हों जो आज्ञा मानने वाले के हित की हों जो आज्ञा मानने वाले के मन को सुख एवं खुशियां प्रदान करें। यह एक अलग बात है कि खुशी एवं सुख आज न मिलकर कल से मिले, आज की तपस्या हो कल का सुख एवं आनन्द हो।

दूसरी तरफ हर पदाधिकारी को अपने सीनियर पदों का सम्मान एवं उनकी (जहां से आज्ञा मिलनी होती है) आज्ञा का पालन अवश्य करना चाहिए क्योंकि इस ही से अनुशासन बनता है आज्ञा का उल्लंघन इन्सान को निन्दनीय बनाता है अतः हर किसी का फर्ज है वह आज्ञाकारी जरुर हो। हर आज्ञा को तोले नहीं आज्ञा देने वाले को बार बार यह न एहसास कराये तु कौन है उसे आज्ञा देने वाला। यह भाव संगठन का पतन करता है। सब अपने अपने पदों को समझें तथा अधिकृत आज्ञाओं का पालन करके संगठन में अनुशासन बनाने में मदद करें।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

रामराज्य आह्वान मिशन

काश! हम सब भी श्रीराम जैसे अच्छे स्वामी, श्रीराम जैसे अच्छे कर्मचारी, श्रीराम जैसे अच्छे मैनेजर, श्रीराम जैसी अच्छी प्रजा होते तो इस दुनिया का तो सुखी होना, आनन्द से भरपूर होना तय था।

''आओ रामपन सीखे एवं राम जैसे हो जाऐं''

www.ramrajyaahwahan.com

हमारे दोस्त बने एवं धरती पर रामराज्य लाने का चैलेंज स्वीकार करें

बस अगर आप हमारे दोस्त बनना चाहते हैं तो आपको किन्हीं 3 घरों/व्यापारों में 'रामराज्य' बनाने का लक्ष्य साधना होगा तथा उसमें हम भी आपका साथ देंगे। इसके लिए आपने निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना है।

- आप बस सिर्फ काम बनाऐं, कभी भी कोई काम बिगाड़ें नहीं, न अपना, न किसी और का।
- आप सिर्फ समझाऐं, सिर्फ समझाऐं मगर जबरदस्ती न करें, दूसरे के समझने का इन्तजार करें सब्र रखें।
- आप सिर्फ प्रेमपूर्ण (सौहार्द्रतापूर्ण) वातावरण बनाऐ, कभी क्लेशपूर्ण नहीं, कभी नहीं।
- आप सभी से करुणापूर्ण, दयापूर्ण, सहयोगी भाव रखें।
- दूसरे ने जो किया, जैसे किया क्यों किया उसकी ऐसा करने की मजबूरी समझें, कभी उससे नफरत या गुस्सा ना करें।
- आप अपने काम बनाते समय ध्यान रखें किसी और का काम न बिगड़ जाऐ, काम सभी के बनने ही चाहिऐं, समन्वय बैठाऐं।
- बस ऐसा करें, एवं करते ही रहें, एक दिन सब अच्छा हो जाएगा, अभ्यास करते रहें, करते रहें, अभ्यास से आप इस कला में पारंगत हो जाऐंगे।

अभ्यास से अर्जुन ने ऐसा तीर चलाना सीख लिया था जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता, आप भी यह सब सीख जाऐंगे।

यही तो 'राम' हैं, यही तो रामराज्य है।

जय श्रीराम